डा. मेधावी जैन (संस्थापिका, धर्मा फॉर लाइफ) से एक समालाप

डा. रेखा जैन (पूर्व अर्थशास्त्र प्रोफेसर, दिल्ली यूनिवर्सिटी)

मेधावी जी सबसे पहले मैं आपको आपके Dharma for life के कार्यक्रमों के लिये अनेकानेक बधाईयां देना चाहती हूँ. मैं इस कार्यक्रम की हर ज्ञान-सभा में आती रही हूं. निरंतर होने वाली ये ज्ञान-सभायें ज्ञान की गंगा सी बहती जाती हैं और मन मस्तिष्क के कपाट एक के बाद एक खोलती जाती हैं. सच में लगता है आप नाम से ही नहीं कर्म से भी मेधावी हैं. ये ज्ञान-सभायें धर्म और जीवन के विभिन्न कोणों की मीमांसा करती हैं. इन पर चर्चा करना व ऐसी ज्ञान सभाओं का आयोजन करना आसान नहीं है किन्तु आपके लिये लगता है कुछ भी मुश्किल नहीं है. आप अत्यंत कुशलतापूर्वक Dharma for Life को आगे ही आगे बढ़ाती जा रही हैं.

प्र. -1 मन में एक प्रश्न उठता है कि कब और कैसे आपके मन में विचार आया कि धर्म और जीवन को लेकर कुछ किया जाये? दर्शनशास्त्र तो बहुत से विद्यार्थी या गृहस्थ पढ़ते हैं, कई इस पर शोध कार्य करते हैं पर आज तक किसी को इतना गहरे उतरते नहीं देखा.

उ. चाहे हम मानें या न मानें किन्तु धर्म हमारे जीवन में बेहद महत्वपूर्ण रोल प्ले करता है. जिस धर्म विशेष के परिवार में हम जन्म लेते हैं, उसका प्रभाव हमारे मन-मस्तिष्क, पालन-पोषण, खान-पान इत्यादि सभी पर गहरा असर करता है. इतना कि समय के साथ-साथ हमारे जीवन के सभी चुनाव, चाहे बड़े हों अथवा छोटे, कहीं न कहीं उसी धर्म से प्रभावित रहते हैं. चूंकि धर्म की व्याख्या करने के कहीं कोई नियम-कायदे नहीं हैं एवं शायद हो भी नहीं सकते, ऐसे में इस व्याख्या का उत्तरदायित्व अक्सर उन हाथों में चला जाता है जो शायद इसके सही हक़दार नहीं हैं. जिसके चलते आज हम समाज में, विश्व में धर्म का विकृत रूप देख रहे हैं. मुझे भी जन्म से ही धर्म, जीवन का उद्देश्य एवं ईश्वर की अवधारणा जैसे अनेक विषयों के प्रति बेहद जिज्ञासा रही है. जिसके चलते मैं बचपन में भेंट-भजन इत्यादि खूब मन से सुनती थी, रामायण का पाठ करती थी एवं बड़े होने के बाद मुझे जैन दर्शन में रूचि हुई एवं कहीं न कहीं मुझे मन में उठते असंख्य प्रश्नों के संतुष्ट उत्तर मिले. जिसके कारणवश मैंने जैन दर्शन में पीएचडी हासिल

की. ऐसे में मुझे लगा कि समाज का एक बुद्धिजीवी वर्ग ऐसा है जिसे शायद प्रवचनों की नहीं अपितु एक विद्वत्तापूर्ण एवं तार्किक मंच की खोज है. बस यहीं से धर्मा फॉर लाइफ का जन्म हुआ.

प्र. 2. जब आपके मन में धर्म व जीवन पर कुछ अच्छा करने का विचार आया तो उसे आपने मूर्तिरूप कैसे दिया? क्या मूर्तिरूप देने के पश्चात, आपको पता था कि ये ज्ञान सभायें इतना विस्तार पायेंगी?

उ. भारत में एक ओर असीम ज्ञान का उद्दाम सागर है जो अलौकिक के विषय में विस्तार से बताता है एवं दूसरी ओर उसका लौकिक प्रयोजन है. बस इसी सोच के साथ मेरा प्रयास रहता है कि हमारे प्रत्येक कार्यक्रम में अपने विशिष्ट विषय के विशेषज्ञ का एक शैक्षिक लेक्चर हो एवं तत्पश्चात उसी विषय से संबंधित एक पैनल डिस्कशन हो जिसमें प्रत्येक आयु एवं पेशे के लोग भाग लें, ताकि न केवल आमजन को बल्कि प्रतिभागियों को भी कुछ नया सीखने को मिले. जब भी हम कुछ नया शुरू करते हैं तो मन में एक भय तो रहता है किन्तु बस यही लगा कि नीयत शुद्ध है एवं इरादे पक्के तो देखते हैं यह प्रयास किस दिशा में जाएगा. अभी तो शुरुआत भर है.

प्र. -3. आप हिंदी साहित्य की भी उम्दा लेखिका हैं एवं आपके कई काव्य-संग्रह एवं लघु-कथा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं. साथ ही आप हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य कर रही कई साहित्यिक संस्थाओं में भी सक्रिय रूप से योगदान देती रहतीं हैं. ऐसे में क्या आपको लगता है कि धर्म एवं साहित्य का आपस में कहीं रिश्ता है?

उ. धर्म वास्तव में दर्शन ही है जिसमें गहरा उतरने हेतु चिंतन की आवश्यकता होती है. साहित्य भी अपने आस-पास घटित होने वाली घटनाओं के अवलोकन के गंभीर चिंतन के फलस्वरूप ही उपजता है. ऐसे में मुझे लगता है कि धर्म एवं साहित्य में न केवल करीबी रिश्ता है बल्कि भाईचारा है. इस दृष्टि से देखें तो विज्ञान भी सृष्टि के नियमों की खोज की ही बाबत है. इसीलिए मेरे ज्ञान एवं चिंतन के अनुसार दर्शन पिता है एवं साहित्य एवं विज्ञान उसके दो बेटे. रही बात व्यक्ति के व्यक्तित्व पर धर्म एवं साहित्य की छाप की तो मैं अपने अनुभव के आधार पर यह कह सकती हूं कि यदि सभी धार्मिक व्यक्ति साहित्य (एवं विज्ञान) भी पढ़ें तो वे कट्टरता के चंगुल में कभी फंसेंगे ही नहीं. चूंकि धर्म यदि अलौकिक के विषय में बताता है तो साहित्य (एवं विज्ञान) खोजी को लौकिक जगत की वास्तविकता से जोड़ धरातल पर रहना एवं संघर्षों से जूझना सिखाते हैं.

प्र. -4. आपकी सभाओं में आमंत्रित विद्वानों का चयन कैसे होता है एवं आप विषय कैसे चुनती हैं?

उ. हम सभी मनुष्य अधिकतः एक सा ही सोचते हैं एवं सभी के मन में एक ही से प्रश्न उठते हैं इसी आधार पर अभी तक मैंने अपने ही मन के प्रश्नों के आधार पर विद्वानों को आमंत्रित किया है.

प्र. -5. आप यह कार्य संचालित कैसे करती हैं? क्या आप किसी से सलाह करती हैं या किसी की रचना से प्रभावित हो कुछ चुनाव करने का निर्णय लेती हैं?

उ. पीएचडी एवं अपने शोध कार्य के दौरान कई कॉन्फरेन्सेस में भाग लेना हुआ एवं उस दौरान कई वरिष्ठ विद्वानों से न केवल जान-पहचान हुई बल्कि मार्गदर्शन भी मिला. उसी आधार पर मैं विद्वानों से संपर्क करती हूं एवं उनकी विशेषता अनुसार विषय निर्धारण करती हूं.

प्र. -6. अंतिम प्रश्न जो मुझे लग रहा है महत्वपूर्ण हो सकता है वह है - धर्म का आत्मा से संबंध है क्या आप मानती हैं? यदि हाँ तो क्या आत्मा-अनात्मा तादात्म्य आदि पर आगे चर्चा करने का विचार है?

उ. धर्म का अर्थ जो अब तक मेरी समझ में आया है वह है, 'सृष्टि के वे मूलभूत एवं सार्वभौमिक नियम जो द्रव्य, क्षेत्र एवं काल से परे निष्पक्ष हैं एवं सभी जीवों के लिए एक से हैं'. जब हम उन नियमों पर एवं वे किस पर लागू होते हैं, इस पर चिंतन करते हैं तो पाते हैं कि सृष्टि के क्रियाकलाप में मुख्यतः दो खिलाड़ी हैं, एक जीव अर्थात आत्मा एवं दूसरा अजीव अर्थात जिसमें चेतना एवं ज्ञान का गुण नहीं है. इस दृष्टि से धर्म का आत्मा से भी संबंध है एवं अनात्मा से भी. अतः ज्ञान चाहे हम कहीं भी अर्जित करें, विद्यालय में अथवा धर्मा फॉर लाइफ की सभाओं में, वह अपरिहार्य रूप से जीव-अजीव के संबंध पर ही आधारित है. इसीलिए हम चर्चा किन्हीं अन्य विषयों पर कर ही नहीं सकते.

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने अपना बहुमूल्य समय मुझे दिया. आपके विचार और आपकी कार्य के प्रति निष्ठा जानकर बहुत अच्छा लगा. ईश्वर आपका मार्ग सदा प्रज्जवलित एवं आसान करें ऐसी आशा करती हूं.